डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी : राष्ट्रवाद, शिक्षा और राष्ट्रीय एकता के महान पुरोधा

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी (**6 जुलाई 1901 – 23 जून 1953**) आधुनिक भारत के उन **महान राष्ट्रनायकों** में गिने जाते हैं जिन्होंने **शिक्षा, राजनीति, प्रशासन और राष्ट्र निर्माण** के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। वे **एक प्रख्यात शिक्षाविद्, विधिवेत्ता, कुशल प्रशासक, दूरदर्शी राजनेता तथा प्रखर राष्ट्रवादी विचारक** थे। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र की एकता, सांस्कृतिक अस्मिता और जनसेवा के प्रति समर्पित रहा। वे ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपने ***सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया और राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि माना***।

डॉ. मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 को कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। उनके पिता **सर आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय के विख्यात कुलपति** थे। उनकी माता श्रीमती जोगमाया देवी धार्मिक एवं संस्कारवान महिला थीं। पारिवारिक वातावरण का उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ा और बचपन से ही उनमें अध्ययन के प्रति विशेष रुचि दिखाई दी।

उन्होंने **प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता से अंग्रेज़ी विषय में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान** प्राप्त किया। इसके पश्चात उन्होंने बंगला साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि तथा **विधि (एल.एल.बी.) की शिक्षा प्राप्त की। आगे की कानूनी शिक्षा के लिए वे इंग्लैंड गए और लिंकन्स इन से बैरिस्टर बने**। अपनी असाधारण प्रतिभा और विद्वत्ता के कारण वे केवल **33 वर्ष की आयु में 1934 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति** बने। उनके कार्यकाल में विश्वविद्यालय में अनेक महत्वपूर्ण शैक्षणिक सुधार हुए। उन्होंने भारतीय भाषाओं को उच्च शिक्षा में सम्मानजनक स्थान दिलाने का प्रयास किया तथा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने पहली बार विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह को बंगला भाषा में संबोधित किया।

डॉ. मुखर्जी ने 1929 में बंगाल विधान परिषद के सदस्य के रूप में अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की। वे एक स्वतंत्र और स्पष्ट विचारों वाले नेता थे। **वर्ष 1941 में वे ए. के. फ़ज़लुल हक़ के नेतृत्व वाली बंगाल सरकार में वित्त मंत्री** बने। अपने कार्यकाल में उन्होंने प्रशासनिक सुधारों पर बल दिया तथा प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोगों की सहायता के लिए विभिन्न सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर राहत कार्यों का संचालन किया।

स्वतंत्रता से पूर्व वे अखिल भारतीय हिन्दू महासभा से जुड़े और 1943 से 1946 तक उसके अध्यक्ष रहे। ***देश के विभाजन*** के समय उन्होंने बंगाल के हिन्दू-बहुल क्षेत्रों को भारत में बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। **उनके प्रयासों से पश्चिम बंगाल भारत का अभिन्न अंग बना**। उनका मानना था कि राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक पहचान की रक्षा प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें भारत सरकार में उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री बनाया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने ***औद्योगिक विकास, आत्मनिर्भरता और आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास*** किए। किंतु **1950 के नेहरू–लियाकत समझौते को लेकर उनके मतभेद उत्पन्न** हुए। उनका मानना था कि यह समझौता पूर्वी पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दू अल्पसंख्यकों के हितों की पर्याप्त सुरक्षा नहीं कर सका। सिद्धांतों से समझौता न करते हुए उन्होंने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया।

21 अक्टूबर 1951 को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की और उसके प्रथम अध्यक्ष बने। उन्होंने राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, सांस्कृतिक मूल्यों तथा राष्ट्रीय एकता को पार्टी की मूल विचारधारा बनाया। यही जनसंघ आगे चलकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के रूप में विकसित हुआ।

डॉ. मुखर्जी का सबसे **प्रसिद्ध जनआंदोलन जम्मू-कश्मीर को प्राप्त विशेष दर्जे के विरोध** से जुड़ा है। उनका मानना था कि एक संप्रभु राष्ट्र में दो संविधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं हो सकते। उनका प्रसिद्ध उद्घोष—**"एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेंगे"**—राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बन गया।

1953 में उन्होंने बिना परमिट के जम्मू-कश्मीर में प्रवेश करने का निर्णय लिया। उन्हें राज्य की सीमा पर गिरफ्तार कर लिया गया। हिरासत के दौरान उनकी तबीयत बिगड़ गई और **23 जून 1953 को उनका निधन हो गया।** उनकी मृत्यु ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया और इसकी परिस्थितियों को लेकर व्यापक चर्चा तथा निष्पक्ष जांच की मांग उठी।

राजनीति के अतिरिक्त डॉ. मुखर्जी भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण के लिए भी समर्पित थे। वे महाबोधि सोसाइटी से जुड़े रहे तथा भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्यों सारिपुत्र और महा-मौद्गल्यायन के पवित्र अवशेषों को भारत वापस लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे उनकी भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रति गहरी आस्था का परिचय मिलता है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन ज्ञान, राष्ट्रभक्ति, साहस और त्याग का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट नेतृत्व दिया, प्रशासन में ईमानदारी और दक्षता का परिचय दिया तथा राजनीति में सिद्धांतों और राष्ट्रीय हितों को सर्वोच्च स्थान दिया। उनका जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि राष्ट्र की एकता, अखंडता और सांस्कृतिक गौरव की रक्षा प्रत्येक नागरिक का सर्वोच्च दायित्व है।

आज भी डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को एक महान शिक्षाविद्, दूरदर्शी राष्ट्रनेता और भारत की एकता एवं अखंडता के सशक्त प्रहरी के रूप में श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्रसेवा, सत्यनिष्ठा और समर्पण की प्रेरणा देता रहेगा।

Dr. Shyama Prasad Mookerjee: A Visionary Educationist and National Leader

Dr. Shyama Prasad Mookerjee (6 July 1901 – 23 June 1953) was one of the most distinguished leaders of modern India, remembered as an eminent educationist, jurist, parliamentarian, and nationalist. His contributions to higher education, public administration, industrial development, and national integration have left an enduring legacy. A man of exceptional intellect and unwavering conviction, Dr. Mookerjee devoted his life to strengthening India's unity and preserving its cultural heritage.

Born on 6 July 1901 in Calcutta (now Kolkata), Dr. Mookerjee belonged to a family renowned for its academic excellence and public service. His father, Sir Ashutosh Mukherjee, was an eminent judge of the Calcutta High Court and one of India's greatest educationists, serving as the Vice-Chancellor of the University of Calcutta. Inspired by his father's ideals, Shyama Prasad excelled in academics from an early age. He graduated with First Class First in English from Presidency College in 1921, obtained a Master's degree in Bengali in 1923, completed his Bachelor of Law in 1924, and later qualified as a Barrister after studying at Lincoln's Inn in England.

His academic brilliance earned him the distinction of becoming the youngest Vice-Chancellor of the University of Calcutta in 1934 at the age of only thirty-three. During his tenure, he introduced several reforms that strengthened higher education. He encouraged the use of Indian languages in academic studies, and under his leadership, Rabindranath Tagore delivered the University Convocation Address in Bengali for the first time. These initiatives reflected his belief that education should combine modern knowledge with India's cultural traditions.

Dr. Mookerjee entered public life in 1929 when he became a member of the Bengal Legislative Council representing Calcutta University. Later, he served as the Finance Minister of Bengal under the Progressive Coalition Government led by A. K. Fazlul Haq from 1941 to 1942. During this period, he criticized several British policies and actively organized relief work for flood-affected people with the support of social and religious organizations, demonstrating his commitment to public welfare.

In the years preceding India's independence, Dr. Mookerjee emerged as an influential political leader. He joined the Hindu Mahasabha and served as its President from 1943 to 1946. During the Partition of India, he strongly advocated the division of Bengal so that its Hindu-majority regions remained within India. His efforts played an important role in the creation of the present-day state of West Bengal, ensuring that millions of people remained part of the Indian Union.

Following India's independence in 1947, Prime Minister Jawaharlal Nehru invited Dr. Mookerjee to join the first Union Cabinet as the Minister for Industry and Supply. In this role, he emphasized industrial development and economic self-reliance as essential pillars of nation-building. However, differences soon emerged between him and the government over several national issues, particularly concerning the Nehru–Liaquat Pact of 1950 relating to minority

rights in India and Pakistan. Believing that the agreement did not adequately safeguard the interests of Hindus in East Pakistan, he resigned from the Cabinet on grounds of principle.

Determined to provide an alternative political vision rooted in nationalism and democratic values, Dr. Mookerjee founded the Bharatiya Jana Sangh on 21 October 1951 and became its first President. The party later evolved into one of India's major political traditions, with the Bharatiya Janata Party (BJP) tracing its origins to the Jana Sangh.

One of Dr. Mookerjee's most significant public campaigns was his opposition to the special constitutional status granted to Jammu and Kashmir under Article 370. He believed that a sovereign nation should have one Constitution, one national flag, and one head of government. His famous slogan, **"Ek Desh Mein Do Vidhan, Do Pradhan Aur Do Nishan Nahin Chalenge"** ("One country cannot have two constitutions, two prime ministers, and two national flags"), became a powerful expression of his commitment to national integration.

In 1953, while attempting to enter Jammu and Kashmir without the permit then required for Indian citizens, Dr. Mookerjee was arrested. During his detention, his health deteriorated, and he passed away on 23 June 1953 under controversial circumstances. His death led to widespread public concern and demands for an independent inquiry, making it one of the most discussed events in India's early political history.

Beyond politics, Dr. Mookerjee remained deeply committed to India's cultural and spiritual heritage. He was associated with the Mahabodhi Society and played an important role in bringing the sacred relics of Lord Buddha's disciples back to India, reflecting his respect for the country's diverse religious traditions.

Dr. Shyama Prasad Mookerjee's life was a remarkable blend of scholarship, public service, and patriotism. As an educationist, he strengthened higher education; as an administrator, he promoted industrial development; and as a nationalist leader, he worked tirelessly for the unity and integrity of India. His courage, integrity, and dedication continue to inspire generations. Remembered as a visionary nation-builder, Dr. Mookerjee's contributions remain an integral part of India's democratic and intellectual heritage.